हि. प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

हिन्दी (लिखित)

पेपर: 2 + 4 परीक्षा सत्र सितम्बर 2022 अंक - 60 समय: 2 घण्टे

नोट:- 1) सभी प्रश्न अनिवार्य है। 2) प्रत्येक प्रश्न के अंक कोष्ठक में दिए गए है

प्रश्न: 1 निम्नलिखित गद्यांश का अनुवाद सरल हिंदी में करें

All my friends. Settle down let me talk, I will get more and more emotional (crowd gets louder as he composes himself). My life, between 22 yards for 24 years, it is hard to believe that that wonderful journey has come to an end, but I would like to take this opportunity to thank people who have played an important role in my life. Also, for the first time in my life I am carrying this list, to remember all the names in case I forget someone. I hope you understand. It's getting a little bit difficult to talk but I will manage.

The most important person in my life, and I have missed him a lot since 1999 when he passed away, my father. Without his guidance, I don't think I would have been standing here in front of you. He gave me freedom at the age of 11, and told me that I should chase my dreams, but make sure you do not find shortcuts. The path might be difficult but don't give up, and I have simply followed his instructions. Above all, he told me to be a nice human being, which I will continue to do and try my best. Every time I have done something special and showed my bat, it was for my father.

My mother, I don't know how she dealt with such a naughty child like me. I was not easy to manage. She must be extremely patient. For a mother, the most important thing is that her child remains safe and healthy and fit. That was what she was most bothered and worried about. She took care of me for the last 24 years that I have played for India, but even before that she started praying for me the day I started playing cricket. She just prayed and prayed and I think her prayers and blessings have given me the strength to go out and perform, so a big thank you to my mother for all the sacrifices.

In my school days, for four years, I stayed with my uncle and aunt because my school was quite far from my home, and they treated me like their son. My aunt, after having had a hard day's play, I would be half asleep and she would be feeding me food so I could go again and play tomorrow. I can't forget these moments. I am like their son and I am glad it has continued to be the same way.

(15 अंक)

प्रश्न: 2 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या सरल हिंदी में करें।

सोचिए, हमारी संस्कृति में हजारों वर्ष पहले जल और जल संरक्षण का महत्व समझाया गया है। जब ये ज्ञान, हम, आज के सन्दर्भ में देखते हैं, तो रोमांचित हो उठते हैं, लेकिन, जब इसी ज्ञान को देश, अपने सामर्थ्य के

रूप में स्वीकारता है तो उनकी ताकत अनेक गुना बढ़ जाती है। आपको याद होगा, 'मन की बात' में ही चार महीने पहले मैंने अमृत सरोवर की बात की थी। उसके बाद अलग-अलग जिलों में स्थानीय प्रशासन जुटा, स्वयं सेवी संस्थाएं जुटीं और स्थानीय लोग जुटे - देखते ही देखते, अमृत सरोवर का निर्माण एक जन-आंदोलन बन गया है। जब देश के लिए कुछ करने की भावना हो, अपने कर्तव्यों का एहसास हो, आने वाली पीढ़ीयों की चिंता हो, तो सामर्थ्य भी जुड़ता है, और संकल्प, नेक बन जाता है। मुझे तेलंगाना के वारंगल के एक शानदार प्रयास की जानकारी मिली है। यहाँ एक नई ग्राम पंचायत का गठन हुआ है जिसका नाम है 'मंग्त्या-वाल्या थांडा'। यह गाँव जंगल के करीब है। यहाँ के गाँव के पास ही एक ऐसा स्थान था जहाँ मानसून के दौरान काफी पानी इकट्ठा हो जाता था। गाँव वालों की पहल पर अब इस स्थान को अमृत सरोवर अभियान के तहत विकसित किया जा रहा है। इस बार मानसून के दौरान हुई बारिश में ये सरोवर पानी से लबालब भर गया है।

मैं मध्य प्रदेश के मंडला में मोचा ग्राम पंचायत में बने अमृत सरोवर के बारे में भी आपको बताना चाहता हूँ। ये अमृत सरोवर कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के पास बना है और इससे इस इलाके की सुन्दरता को और बढ़ा दिया है। उत्तर प्रदेश के ललितपुर में, नवनिर्मित शहीद भगत सिंह अमृत सरोवर भी लोगों को काफी आकर्षित कर रहा है। यहाँ की निबारी ग्राम पंचायत में बना ये सरोवर 4 एकड़ में फैला हुआ है। सरोवर के किनारे हुआ वृक्षारोपण इसकी शोभा को बढ़ा रहा है। सरोवर के पास लगे 35 फीट ऊँचे तिरंगे को देखने के लिए भी दूर-दूर से लोग आ रहे हैं। अमृत सरोवर का ये अभियान कर्नाटका में भी जोरों पर चल रहा है। यहाँ के बागलकोट जिले के 'बिल्केरूर' गाँव में लोगों ने बहुत सुंदर अमृत सरोवर बनाया है। दरअसल इस क्षेत्र में, पहाड़ से निकले पानी की वजह से लोगों को बहुत मुश्किल होती थी, किसानों और उनकी फसलों को भी नुकसान पहुँचता था। अमृत सरोवर बनाने के लिए गाँव के लोग, सारा पानी एक तरफ ले आए। इससे इलाके में बाढ़ की समस्या भी दूर हो गई। अमृत सरोवर अभियान हमारी आज की अनेक समस्याओं का समाधान तो करता ही है, हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी उतना ही आवश्यक है। इस अभियान के तहत, कई जगहों पर, पुराने जलाशयों का भी कायाकल्प किया जा रहा है। अमृत सरोवर का उपयोग, पशुओं की प्यास बुझाने के साथ ही, खेती-किसानी के लिए भी, हो रहा है। इन तालाबों की वजह से आस-पास के क्षेत्रों का भूमिगत जल स्तर बढ़ा है। वहीं इनके चारों ओर हरियाली भी बढ़ रही है। इतना ही नहीं, कई जगह लोग अमृत सरोवर में मछली पालन की तैयारियों में भी जुटे हैं। मेरा, आप सभी से और खास कर मेरे युवा साथियों से आग्रह है कि आप अमृत सरोवर अभियान में बढ़-चढ़कर के हिस्सा लें और जल संचय और जलसंरक्षण के इन प्रयासों को पूरी की पूरी ताकत दें, उसको आगे बढ़ायें।

(10 अंक)

प्रश्न: 3 वित्त विभाग द्वारा सभी विभागाध्यक्षों को यह निर्देश दिए गए हैं कि वे आगामी वित्तीय वर्ष के लिए अपने विभाग की मांगों को तीन सप्ताह के भीतर प्रेषित करें। सचिव वित्त विभाग द्वारा सभी विभागाध्यक्षों को यह निर्देश पत्र के रूप में लिखें।

(10 अंक)

प्रश्न: 4 निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें:-

1. Tender
2. Administrative Department (AD)
3. Retrospective
4. Drawing and Disbursal Officer (DDO)

5. Subordinate
6. Perusal
7. Departmental Inquiry
8. Paper Under Consideration (PUC)

(8 अंक)

प्रश्न: 5 निम्न मुहावरों एवं लोकोक्तियों के अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग करें :-

1. खून ठण्डा होना
2. दीवारों के कान होना
3. तिनके का सहारा
4. छोटा मुँह बड़ी बात
5. दिल बाग-बाग होना

(5 अंक)

प्रश्न: 6 निम्न शब्दों/वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखें :-

1. उंचा
2. स्कुल
3. प्रशाशन
4. प्रशिक्षन
5. व्यक्तित्त्व
6. मुख्यामंत्री
7. निदेषक

(7 अंक)

प्रश्न: 7 निम्न अनेक शब्दों एक शब्द लिखें :-

1. सब कुछ जानने वाला
2. प्रतिदिन होने वाला
3. जो हो न सके
4. शाक सब्जी खाने वाला
5. बहुत कठिनाई से मिलने वाला

(5 अंक)

हि. प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

हिन्दी (मौखिक)

पेपर: 2 + 4 परीक्षा सत्र सितम्बर 2022 अंक - 40 समय: 1 घण्टा

1 . (Reading of a passage. लेखांश का पठन)

आधुनिक भारत के राष्ट्र निर्माताओं ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। संविधान सभा में लंबे विमर्श के बाद हिंदी को यह दर्जा मिला। 20 से अधिक सदस्यों ने हिंदी के पक्ष-विपक्ष में तर्क दिए, लेकिन अंत में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन के एकमात्र वोट से हिंदी को राजभाषा बनाने पर सभा ने अपनी मुहर लगाई। इस प्रक्रिया में अनेक प्रश्न उठे थे, परंतु 12 से 14 सितंबर, 1949 के बीच उनके समाधान के जो प्रयास 73 साल पहले प्रारंभ हुए, वे अब लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

संविधान द्वारा घोषित राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा यूं तो लक्ष्योन्मुखी रही है, लेकिन उसके राष्ट्रव्यापी प्रसार की राह में चुनौतियां अब भी कायम हैं। कारण यही कि अंग्रेज गए, पर अंग्रेजीयत नहीं गई। अंग्रेजी के इस जंजाल के चलते राजकाज में सौ प्रतिशत हिंदी प्रयोग का लक्ष्य अभी दूर जरूर है, परंतु असंभव नहीं। इसी क्रम में 73 साल बाद पहली बार राजधानी दिल्ली से बाहर गुजरात के सूरत में 14-15 सितंबर को आयोजित होने वाला हिंदी दिवस समारोह एक नया अध्याय लिखने का प्रयास है।

हिंदी की प्रगति, चुनौतियों, संकट और भविष्य को लेकर साहित्यकार-संपादक डा. धर्मवीर की यह टिप्पणी उल्लेखनीय है कि, 'किसी भाषा की प्रतिष्ठा केवल इसलिए नहीं होती कि वह व्याकरण, लिपि, साहित्य-संपदा, दृष्टि से कितनी संपन्न है, न ही इस आधार पर कि वह कितने लोगों द्वारा बोली जाती है। उसकी प्रतिष्ठा मूलतः इस आधार पर होती है कि जिनकी वह भाषा है, जो उसे बोलते हैं, उनमें तनकर खड़े हो सकने की रीढ़ है या नहीं? आज हिंदी का संकट यही है कि हिंदीभाषी जन रागात्मक निष्ठा के सांस्कृतिक स्तर पर भाषा से कटा हुआ है।' ये विचार आज भी प्रासंगिक हैं, मगर वर्तमान युग हिंदी के प्रयोग का स्वर्णिम युग है। विपुल शब्द भंडार, साहित्य भंडार, तकनीक के पंखों पर हिंदी की ऊंची वैश्विक उड़ान और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अलावा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे शीर्ष नेताओं ने विश्व मंचों के साथ ही बहुभाषा-भाषी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का जो परचम फहराया, वह भारत और हिंदी प्रेमियों के लिए गर्व और गौरव का विषय है।

इतिहास साक्षी है कि भारतीय भाषाओं के सहयोग-समर्थन से हिंदी की परंपरा पनपी है और हिंदी का छोटा बिरवा आज वटवृक्ष बन चुका है। ऐसा वटवृक्ष जिसके तले सभी भारतीय भाषाओं के पूर्ण विकास और प्रस्फुटन की संभावनाएं हैं। इस बार अखिल भारतीय सम्मेलन सूरत में हो रहा है। गुजराती और हिंदी के अंतर्संबंध अत्यंत प्रगाढ़ रहे हैं। महात्मा गांधी मूलतः गुजराती थे। भाषा द्वारा जोड़ने की शक्ति से भलीभांति अवगत थे। तभी विविधता की थाती वाले भारत देश को एक सूत्र में पिरोने के लिए उन्होंने हिंदुस्तानी-हिंदी को महत्व दिया। दक्षिण में हिंदी के प्रथम प्रचारक के रूप में अपने पुत्र देवदास गांधी को स्वयं द्वारा स्थापित दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा में भेजा। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा और काशी विद्यापीठ, वाराणसी की स्थापना के साथ ही गांधी जी की भाषा-वैचारिकी को व्यावहारिक रूप देने के लिए कई संस्थाएं स्थापित हुईं, जो आज भी सक्रिय हैं।

वास्तव में गुजरात के समर्पित हिंदीसेवियों की एक लंबी परंपरा रही है। काका कालेलकर के नाम से विख्यात मूलतः मराठी भाषी और गुजराती विद्वान दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर प्रतिबद्ध हिंदीसेवी थे। गांधी

जी के सिद्धांतों को समर्पित काका कालेलकर ने गुजराती पत्र 'नवजीवन' का संपादन किया। काका साहब मराठी थे, किंतु गांधी जी की प्रेरणा से उन्होंने सबसे पहले गुजराती एवं हिंदी सीखी और फिर कई वर्षों तक दक्षिण में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार किया। इसी प्रकार मूल रूप से गुजराती सरदार पटेल भी हिंदी के हिमायती थे। उन्होंने दक्षिण भारतीयों से हिंदी सीखने की मार्मिक अपील करते हुए कहा था, 'हमारा संकल्प हिंदी को राजभाषा बनाने का होना चाहिए। राष्ट्रीय एकता के लिए एक भाषा आवश्यक है और अंग्रेजी की जगह हिंदी लाने का संकल्प शीघ्र लागू किया जाए।'

गुजरात के स्वामी दयानंद सरस्वती की हिंदी सेवा ऐतिहासिक है। उन्होंने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' और अन्य पुस्तकें हिंदी में लिखकर हिंदी की सेवा की। विश्वविभूति विदेह जैसे विद्वानों की भी गुजरात में हिंदी सेवा ऐतिहासिक तथा अविस्मरणीय है। वास्तव में हिंदी को अनेक हिंदीतर भाषी हिंदी-सेवियों ने सींचा है। कवि सुब्रह्मण्य भारती, एम. सत्यनारायण राव, टीएसके कण्णन, बालशौरि रेड्डी, राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन, स्वामी दयानंद, स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा हंसराज, एनी बेसेंट, सी. राजगोपालाचारी, विनायक दामोदर सावरकर, बाबूराव विष्णु पराड़कर और रंगनाथ रामचंद्र दिवाकर आदि दिग्गजों और उनके अवदान की एक लंबी सूची है।

मोरारजी देसाई का कांग्रेस के मुंबई अधिवेशन में हिंदी संबंधी प्रस्ताव और गुजरात, महाराष्ट्र के स्कूलों में हिंदी पढ़ाए जाने के सूत्रधार के रूप में उनकी भूमिका ऐतिहासिक रही। सुभाषचंद्र बोस ने कहा था, 'वह दिन दूर नहीं जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिंदी।' सयाजी राव गायकवाड़ (गुजरात) तथा हरेकृष्ण महताब (ओडिशा) की भी हिंदी सेवा स्मरणीय है। केवल भारतीयों ने ही नहीं, बल्कि विदेशियों ने भी हिंदी की भरपूर सेवा की। ऐसे ही एक बेल्जियम के ईसाई विद्वान फादर कामिल बुल्के थे। वह हिंदी और संस्कृत के साथ तुलसी साहित्य के अनन्य साधक थे। उनका यह वक्तव्य आज भी प्रासंगिक है कि, 'संस्कृत भाषाओं की 'महारानी', हिंदी 'बहूरानी' तथा अंग्रेजी 'नौकरानी' है।

बहरहाल, आज दक्षिण भारत सहित संपूर्ण देश में हिंदी का जिस तेजी से प्रसार हो रहा है, उसे गति प्रदान करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन की महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका होगी। यह भी सिद्ध हो चुका है कि अंग्रेजों द्वारा अंग्रेजी हम पर थोपी गई थी। हिंदी तो भारत की प्राण भाषा है। इसे थोपे जाने का विवाद व्यर्थ है। संपूर्ण देश में अब राजभाषा हिंदी से जुड़े प्रश्नों का संवैधानिक समाधान हो चुका है। इसलिए आम जन की यह धारणा है कि आपसी संवाद की भाषा हिंदी को विवाद का विषय मत बनाइए।

2. (Conversation with Examiner on some contemporary topic. किसी समसामयिक विषय पर परीक्षक से संवाद)